करवा चौथ की कहानी

एक गाँव में एक साहूकार के सात बेटे और एक बेटी थी। सेठानी ने सातों बहुएँ और बेटी सहित कार्तिक कृष्णा चौथ को करवा चौथ का व्रत किया। उस लड़की के भाई हमेशा अपनी बहिन के साथ भोजन करते थे। उस दिन भी भाईयों ने बहन को भोजन के लिए बोला। तब बहिन बोली भैया आज मेरा करवा चौथ का व्रत है इसलिए चांद उगेगा जब खाना खाऊँगी। भाइयों ने सोचा कि बहिन भूखी रहेगी इसलिए एक भाई ने दिया लिया और एक भाई ने चलनी लेकर पहाड़ी पर चढ़ गये। दिया जलाकर चलनी से ढ़क कर कहा कि बहन चांद उग गया है। अरख दे ले और खाना खाले तब बहन ने भाभियों से आकर कहा कि भाभी चांद देख लो। भाभी बोली कि बाईजी ये तो चांद तुम्हारे लिये उगा है तुम्ही देख लो हमारा चांद तो रात में दिखेगा। बहन अकेली ही खाना खाने बैठी। पहले कौर में ही बाल आया दूसरा कोर खाने लगी तो उसे सुसराल से बुलावा आ गया कि बेटा बहुत बीमार है सो बहू को जल्दी भेजो।

माँ ने जैसे ही कपड़े निकालने के लिए बक्सा खोला तीन बार ही कभी सफेद, कभी काला कभी नीले कपड़े ही हाथ में आये। माँ ने एक सोने का सिक्का पल्ले से बांध दिया और कहा कि रास्ते में सबके पैर छूती जाना जो भी तुझे अमर सुहाग की आशीष देवें उसको ही यह सोने का सिक्का देना और पल्ले से गांठ बांध लेना। रास्ते में सब औरतें, आशीष देती गई पर किसी ने भी सुहाग की आशीष नहीं दी। सुसराल के दरवाजे पर पहुंचने पर पलने में सोती हुई जेठूती (जेठ की लड़की) झूल रही थी। उसके पैर छूने लगी तो वह बोली कि 'सीली हो सपूती हो सात पूत की माँ हो।' यह वाक्य सुनते हुये उसने जल्दी से सोने का सिक्का निकालकर उसे दे दिया और पल्ले से गांठ बांध ली।

अन्दर गई तो पति मरा पड़ा था। बहू ने अपने मरे हुये पति को जलाने के लिये नहीं ले जाने दिया, और बोली मेरे लिये एक अलग से झोंपड़ी बनवा दो और वहीं अपने मरे हुये पति को लेकर रहने लगीं। रोज सासू बची–खुची, ठण्डी–बासी रोटी दासी के साथ भेज देती, और कहती जा मुर्दा सेवनी को रोटी दे आ। थोड़े दिन बाद माघ की तिल